RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 76, अंक : 1 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 7 अप्रैल, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–76, अंक : 1, 4–7 अप्रैल 2019 तदनुसार 25 चैत्र, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मृत्यु का ब्रह्मचारी

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

मृत्योरहं ब्रह्मचारी यदस्मि निर्याचन्भूतात्पुरुषं यमाय।
तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेणानयैनं मेखलया सिनामि।।
–अथर्व० ६।१३३।३

शब्दार्थ–**अहम्** = मैं **मृत्योः** = मृत्यु का **ब्रह्मचारी** = ब्रह्मचारी हूँ, **यत्** = क्योंकि मैं **भूतात्** = भूतमात्र से **यमाय** = संयम के लिए **पुरुषम्** = पौरुष=पुरुषार्थ को **निर्याचन् अस्मि** = माँग रहा हूँ। **तम्** = उसे **अहम्** = मैं **ब्रह्मणा** = ज्ञान से **तपसा** = तप से तथा **श्रमेण** = परिश्रम से **आनय** = लाकर **एनम्** = इसको **मेखलया** = मेखला से **सिनामि** = बाँधता हूँ।

व्याख्या–ब्रह्मचारी की महिमा अथर्ववेद के ग्यारहवें काण्ड के पाँचवें सूक्त में विस्तार से वर्णित हुई है। अ० ६।१३३ सूक्त भी ब्रह्मचर्य–सम्बन्धी है। इसमें ब्रह्मचर्य के बहिरङ्ग साधन मेखला–कौपीनधारण–का माहात्म्य बताया गया है। इस मन्त्र में जिस ब्रह्मचारी की चर्चा है, वह सभी ब्रह्मचारियों से विलक्षण है। यह है–**मृत्यो... ब्रह्मचारी**=मौत का ब्रह्मचारी।

मौत को गुरु बनाना अति दुष्कर है। मौत का ब्रह्मचारी तो कोई विरला नचिकेता=सन्देहशून्य ज्ञानी ही बन सकता है। जिसने समस्त संसार का सार देखकर इसे असार मान लिया, जिसे मृत्यु अवश्यम्भावी और नूतन भोगसामग्री देने वाला अथवा मुक्ति का साधन दीख गया है, वह मृत्यु के पास जाता है। अथर्ववेद [११।५।१४] में कहा है **'आचार्यो मृत्युर्वरुणः सोम ओषधयः पयः। जीमूता आसन् सत्वानस्तैरिदं स्वराभृतम्'** आचार्य, मृत्यु, वरुण [श्रेष्ठ गुणधारण] सोम [शान्ति] औषध, जल या दूध, बादल ये शक्तियाँ हैं, जिन्होंने स्व=सुख धारण कर रखा है। इस जीवन की चिन्ता से छुड़ाकर नये जीवन में नयी भोगसामग्री दिलाना मृत्यु द्वारा सुख दिलाना है। किसी ने कहा है–

जिस मरने से जग डरे मो को सो आनन्द।
कब मरिये कब पाइये पूरन परमानन्द।

मौत का ब्रह्मचारी भिक्षा के लिए निकला है। माँगता है–**'भूतात्पुरुषं यमाय'** = यम के लिए= संयम के लिए, अथवा मृत्यु के लिए भूतमात्र से पुरुष=पुरुषार्थ।

आचार्य के लिए प्रिय धन लाकर दक्षिणा देनी है। मृत्यु से जीवन माँगता है। जीवन के लिए बल चाहिए, अतः समस्त पदार्थों से बल माँग रहा है। ब्रह्मचारी को भिक्षा मिल गई है। ब्रह्मचारिन्! यह कैसे मिली? **'तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेण...'** मैं उसे ज्ञान, तप और परिश्रम से प्राप्त कर सका हूँ, अर्थात् ब्रह्मचर्य में ज्ञानार्जन, तपोऽनुष्ठान तथा परिश्रम आवश्यक है। मृत्यु सबका–द्विपात्–चतुष्पात् सभी प्राणियों का–ईश है, अतः वह प्रजापति है। उपनयन संस्कार की समाप्ति पर आचार्य कहता है–**'प्रजापतये त्वा परिददामि'** = तुझे प्रजापति= मृत्यु को सौंपता हूँ।

अर्थात् मृत्यु का रहस्य जानने के लिए तू ब्रह्मचारी बना है। ब्रह्मचारी जब सचमुच मृत्यु का ब्रह्मचारी बनकर मृत्यु को परे हटा देता है तब उसका नया जन्म होता है। और–**'तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः'** [अथर्व० ११।५।३]= उस नवोत्पन्न को देखने के लिए सभी ओर से विद्वान् आते हैं।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

नवसम्वत्– नव वर्ष के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई

नववर्ष–नवसम्वत्सर 2076 चैत्र सुदी प्रतिपदा दिनांक 6 अप्रैल 2019 से आरम्भ हो रहा है। सृष्टि सम्वत् 1960853120 के शुभ अवसर पर तथा विक्रमी सम्वत् 2076 के शुभारम्भ पर हम आर्य मर्यादा के सभी पाठकों, आर्य समाजों व आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, प्रिंसीपलों, अध्यापकों, प्राध्यापकों तथा सभी आर्य बन्धुओं व आर्य बहनों को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से, आर्य विद्या परिषद पंजाब की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं भेंट करते हैं व हार्दिक बधाई देते हैं।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

सुदर्शन कुमार शर्मा — प्रधान
प्रेम भारद्वाज — महामंत्री
सुधीर कुमार शर्मा — कोषाध्यक्ष
अशोक परूथी एडवोकेट — रजिस्ट्रार

समस्त अधिकारी व अन्तरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर

डा.सत्यपाल सिंह जी बागपत लोकसभा सीट एवं स्वामी सुमेधानन्द जी को सीकर लोकसभा सीट में पुनः भाजपा की ओर से प्रत्याशी बनाये जाने पर आर्य प्रतिनिधि सभा

पंजाब (रजि.) की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं। यह आर्य जगत के लिये गौरव की बात है।

प्रभु मिलन की राह

ले.-अशोक आर्य वैशाली २०१०१२ गाजियाबाद उ. प्र. भारत

मानव को परमपिता परमात्मा ने सौ वर्ष के लिए इस धरती पर भेजा है किन्तु यह मानव का पुरुषार्थ है कि वह इस धरती पर सौ वर्ष से अधिक समय तक रहे अथवा कम। इस के लिए उसे प्रभु के बनाए नियमों के अनुसार अपने जीवन को चलाना होता है। जो बना लेता है, चला लेता है, वह अधिक भी जी सकता है और जो राग विलास में उलझा रहता है उसे सौ वर्ष भी पूर्ण करने का अवसर नहीं मिलता। इस सम्बन्ध में यजुर्वेद का यह मन्त्र इस पर प्रकाश डाल रहा है।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतःश्रृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।४।। -यजुर्वेद ३६.२४

शब्दार्थ-(चक्षु:) हमारे कर्तव्य कर्मों को दिखाने वाला सर्वदृष्टा (देवहितं) उपकारक (शुक्रं) शुद्ध (तत्) वह प्रभु (पुरस्तात्) हमारे सामने (उच्चरत्) उदय हुआ (शतं शरद:) सौ वर्ष तक (पश्येम) देखते रहें (शतं शरद:) सौ वर्ष (जीवेम) जीवित रहें (शतं शरद:) सौ वर्ष (श्रृणुयाम) सुनें (शतं शरद:) सौ वर्ष (प्रब्रवाम) बोलें अथवा प्रवचन करें (शतं शरद:) सौ वर्ष (अदीना: स्याम) ऐश्वर्यवान् (शरद: शतात् भूयश्च) सौ वर्ष से भी अधिक तक भी हम देखते, सुनते, बोलते हुए स्वावलंबी रहते हुए जीवित रहें।

व्याख्यान-प्रेम की शक्ति

हे पिता! मैं आप की प्रतीक्षा में अपनी कुटिया के दरवाजे पर खड़ा होकर आपके आने का मार्ग निहार रहा हूँ। इस समय मेरे नेत्र स्निग्ध हैं, दृष्टि सजल है, मैं अपनी दोनों भुजाएं पसारे हुए हूँ तथा मेरे हृदय में कभी न समाप्त होने वाली उत्कंठा है। इसी समय आप अपने अत्यधिक उज्जवल सिंहासन, जो राजकीय है, सुन्दर है, सम्मोहन से भरा है, से उठते हो। सिंहासन से उतरते समय आप अपने सुनहरे प्रकाश की भुजाएं फैलाते हुए, सब दिशाओं को अपने अद्भुत रूप से स्नान कराते हुए, अपने स्नेहिल स्पर्श मात्र से सैंकड़ों उमंगें लहराते हुए आते हो। आपकी सजधज निराली सी है और निराली ही शोभा लिए हुए है। आप के इस स्वरूप को देख मैं तृषित आँखों से आपको निहारता ही रह जाता हूँ। इसी समय आप अपनी सब सीमाओं को त्यागते हुए मुझे अपनी छाती से लगा लेते हो। मेरी प्रसन्नता मेरे उर के सब किनारों को तोड़ते हुए उमड़ने घुमड़ने लगती है। इस समय पर न तो कोई सीमा ही रहती है और न ही कोई बंधन ही रह जाता है। आप के असीम, सीमा रहित रूप में यह ससीम, सीमाओं में बंधा हुआ मैं ससीम भी अपने को असीम के समान ही अनुभव करने लगता हूँ। यह कैसा सुन्दर तथा मधुर मिलन है। हे पिता! प्रेम की यह शक्ति धन्य है।

आनंद-मंगल के स्त्रोत का उद्गम

हे प्रभो! आप प्रेम से भरे होने के कारण अत्यंत प्रेममय हो। आप का और मेरा यह जो मधुर मिलन हुआ है, यह चिरंतन है, लम्बे समय तक समाप्त होने वाला नहीं है। मैं जानता हूँ कि आप के आँचल में कभी न समाप्त होने वाली शान्ति निवास करती है। इस शांति को स्थाई रूप से पाने के लिए मैं आप का आंचल, आप का दामन, सदैव के लिए पकड़ लेना चाहता हूँ क्योंकि मैं समझता हूँ कि आप के चरणों में ही सब प्रकार के आनंद-मंगल के स्त्रोत का उद्गम है। मैं इस स्त्रोत को अपनी छाती में दबाए रखना चाहता हूँ।

इन्द्रियां और अंतरात्मा प्रसन्न

हे सब को ज्योति देने वाले ज्योतिर्मय प्रभु! आप का रूप अत्यधिक पावन अर्थात् अत्यधिक पवित्र है। यह अत्यंत तेजस्वी और आह्लाद से भरा हुआ भी है। आप के रूप की राशियाँ पृथिवी, पवन, चन्द्र, गगन, सलिल, के प्रत्येक कण में बिखर रही हैं। आप की इस रुपराशि को हम आँख से आँख मिला कर निहारते रहें, ऐसी हमारी इच्छा है। इस रूपराशी को देखने से जो आनंद हमें मिलता है, उस आनंद का वर्णन नहीं किया जा सकता, वह आनंद तो अवर्णनीय है। हमारी यह इच्छा है कि हम अन्य सब कुछ छोड़ कर सैकड़ों वर्षों से भी अधिक समय तक इसे देखते रहें क्योंकि आप के रूप की छटा को देखकर, इसके दर्शन मात्र से हमारे अंत: करण, हमारे बाह्य, सब प्रकार की इन्द्रियों सहित सम्पूर्ण अंतरात्मा तक भी न केवल प्रसन्न ही होती हैं, बल्कि निर्मल भी हो जाती है।

शक्तियों का दान करने वालों का योगक्षेम

हे सर्व मंगल की मूर्ति रूप प्रभो! प्रतिदिन सूर्य उदय होता है। इस के उदय होने से समस्त सृष्टि आलोक से भर जाती है। सूर्य से आने वाला यह आलोक अथवा प्रकाश अपने आलोक के कारण मार्ग दिखाता है। ठीक सूर्य ही के समान ही आप भी इस चराचर जगत् को मार्ग दिखाने वाले हो। इस प्रकार सब का मार्ग दर्शन करते हुए सब को अपने अपने कर्म में लगा रहे हो, प्रत्येक को अपने अपने कर्म में व्यस्त कर रहे हो। न केवल अग्नि, वरुण अथवा मित्र के ही अपितु सम्पूर्ण विश्व की आप आँख का काम कर रहे हो। आप का यह दिव्य कर्म है कि आप सब का मार्ग दर्शन करते हो। देवों का कल्याण करना भी आपको अत्यधिक प्रिय है। आप का प्रण है कि आप शक्तियों का दान करने वाले लोगों के योगक्षेम का प्रबंध करते हो। आप के गुणों का सौ वर्ष तक कीर्तन करें।

हे सर्व प्रकाशक प्रभो! आप की यह गौरव से भरी हुई गाथा है, इस गाथा का हम सौ वर्ष तक निरंतर श्रवण करते रहें। आप के सब गुणों का भी हम निरंतर सौ वर्ष तक कीर्तन करते रहें। इसके साथ ही साथ हम भी आप ही के समान सब के भले के लिए, सब का मार्ग-दर्शक बनने का सदा प्रयास करते रहें तथा सौ वर्ष तक निरंतर लोक-संग्रह के कार्यों में लगे रहें। इस में ही मानव की धन्यता छुपी है।

हे सब रूपों के निकेतन रूप प्रभो! उस व्यक्ति को कभी दरिद्रता और दीनता नहीं मिल सकती जिसके सामने आप प्रसन्न होकर अपना ऐश्वर्य से भरा हुआ रूप अनावृत कर देते हो, प्रकट कर देते हो। जो जीव आप के बिखरे हुए फूलों के कुञ्ज में खड़े हो कर आप के रूप को निहारने में मस्त हो जाता है, उसे कभी भी किसी के सम्मुख अपने हाथ फैलाने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। वह प्राणी तो अहंकार से भरे किसी अन्य प्राणी के सामने हाथ फैलाकर कभी गिडगिडाने की आवश्यकता ही नहीं समझता, जिसे तारों की मंडली के अन्दर, सुरभित तरंगों के अन्दर, पवन के झकोरों से झकोरित मधुर लहरियों के अन्दर आप की बजाई जा रही वीणा की झंकार सुनने से जिसके सब अंग प्रसन्नता से थिरकने लगते हैं। सोना चांदी के साधन नहीं।

बहुत विशाल इच्छाएं रखने वाला प्राणी ही दरिद्र होता है क्योंकि इतनी अधिक इच्छाओं की पूर्ति संभव ही नहीं हो पाती। इस प्रकार का व्यक्ति सदा पार्थिव वस्तुओं यथा सोने-चांदी के टुकड़ों को एकत्र करने में ही परम तृप्ति समझता है। इस प्रकार के प्राणी से अधिक कृपण और कंगाल और कौन हो सकता है? एक व्यक्ति तो किसी की भी स्तुति के लिए झूठे स्तुति गान करता है, द्वार द्वार पर जा कर अपना माथा झुकाता है और स्थान स्थान पर अपनी अंतरात्मा को बेचने के लिए सदा विवश सा ही बना रहता है।

अपार धन के स्वामी

हे भक्तों के वत्सल पिता! आप सदा अपने भक्तों के योगक्षेम की, उनके भले की चिंता करते हो। प्राणी को जो कुछ भी चाहिए तथा जो कुछ उसके लिए उपयोगी है, वह सब कुछ आप बिना मांगे ही हमें देते रहते हो। आपके चरणों की शीतल छाया में बैठने से हमारी सब प्रकार की कामनाएं प्रतिक्षण पूर्ण हो रही हैं। जब इच्छायें ही पूर्ण हो रही हैं तो फिर हम में दीनता कहाँ? हममें आप के कारण दीनता दरिद्रता नहीं अपितु हम तो अपार धन के स्वामी हैं।

अमर और अभय बनें

प्रभो! आप की मित्रता से बढ़कर इस जगत् में अन्य कोई भी वस्तु नहीं है। जिसके पास आप की मित्रता का कुछ भी अंश है, वह परम भाग्यशाली है। इसलिए हे सब का मंगल चाहने वाले प्रभो! हम चाहते हैं कि आपके चरणों में हमारी अत्यधिक दृढ़ प्रीति हो। बस हम आप से केवल यही माँगते हैं। आप की छाया में हमारा निवास अमृत के समान है। हम सदा इस छाया के आश्रय में रहें। इस प्रकार हम अमर और अभय बनें।

सम्पादकीय

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात् विश्व को आर्य बनाओ

ऋग्वेद ने कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का आदेश देते हुए मनुष्यों को उपदिष्ट किया है कि तुम लोग सब प्रकार से अपने को तथा समस्त जगत् को आर्य बनाते हुए जीवन व्यतीत करो-

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः।।

इस पर प्रशन उठता है कि आर्य किसे कहते हैं? व्याकरण-कर्त्ता पाणिनि मुनि ने आर्य की सिद्धि में अर्यः स्वामीवैश्ययोः सूत्र से प्रदर्शित किया है कि अर्य का अर्थ है स्वामी। अर्थात् जो इन्द्रियों का स्वामी है, जितेन्द्रिय है, वह अर्य कहलाता है। स्वार्थ में अण् प्रत्यय करने पर आर्य शब्द सिद्ध होता है और उसका भी वही अर्थ जितेन्द्रिय है।

निरूक्तकार यास्कमुनि ने यवं वृकेण........ ज्योतिश्चक्रथुरार्याय मंत्र की व्याख्या करते हुए आर्य के निर्वचन में आर्य ईश्वरपुत्रः लिखा है अर्थात् आर्य का अर्थ है परमेश्वर का पुत्र। अब दूसरा प्रश्न उठता है कि परमेश्वर के पुत्र तो सभी हैं फिर आर्य शब्द से विशिष्ट मनुष्य का ग्रहण क्यों किया जाए? इस शंका का समाधान ऋग्वेद के इस मंत्र में किया गया है-

य इन्दोः पवमानस्यानुधामान्यक्रमीत्।
तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमविधःत्मनः।।

हे प्रभु! जिसने पवित्रकारक तेजस्वी आपके सत्त्व-न्याय-दया आदि गुणों का अनुकरण किया हुआ है और सदैव तेरे मन के पीछे चलता है अर्थात् तेरी आज्ञाओं के पालने में नित्य तत्पर रहता है, उसे बुद्धिमान लोगों ने सुप्रजा इस नाम से पुकारा है। अर्थात् वह तुम्हारा सुपुत्र कहलाता है।

इससे स्पष्ट है कि यथार्थ में मनुष्य मात्र परमेश्वर के पुत्र हैं। परन्तु जो लोग पिता प्रभु की आज्ञा पालन में सदा दत्तचित्त रहते हैं, वे ही वस्तुतः ईश्वरपुत्र कहलाने के अधिकारी हैं और उन्हीं पर प्रभु अपनी अपार कृपा वृष्टि किया करते हैं। इस प्रकार पता चलता है कि पूर्ण जितेन्द्रिय होकर परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाला आर्य होता है। जो अजितेन्द्रिय इन्द्रियदास तथा ईश्वर की आज्ञाओं को भंग करता है, वह अनार्य कहलाता है। बस हमें ऐसे आर्य बन कर व दूसरों को बनाकर जीवन व्यतीत करना है। परन्तु प्रश्न यह है कि जितेन्द्रिय तथा ईश्वराज्ञापालक बनने के लिए किन उपायों का आश्रय लिया जाए जिससे हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके तो इसका उपाय वेदमंत्र में ही बता दिया है। इस मंत्र में आर्य बनने-बनाने के तीन उपाय बताए गए हैं-1.इन्द्रं वर्धन्तः 2. अप्तुरः 3. अराव्णः अपघ्नन्तः। अर्थात् इन्द्र को बढ़ाते हुए, कर्त्तव्य कर्मों में ढ़ील न करते हुए तथा न देने की प्रवृत्तियों को दूर करते हुए, इन तीन उपायों से अपने को तथा विश्व को आर्य बनाते हुए जीवन व्यतीत करें।

आर्य समाज के सभी सिद्धान्त और नियम बुद्धिसंगत हैं अर्थात् तर्क तथा युक्ति के अनुकूल है किन्तु हमने उन्हें अपने जीवनों में नहीं ढ़ाला। परिणामस्वरूप न हमारे सामाजिक जीवन में शांति है और न व्यक्तिगत जीवन में। आज का अशान्त मानव ऐसी धर्म सभा या संगठन की शरण में जाना चाहता है जो उसे आत्मिक शान्ति और मानसिक सुख दे सके। इसके लिए आर्य समाज के लोगों को अपने जीवन को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करना होगा। अपने जीवन में महर्षि दयानन्द के आदर्शों और सिद्धान्तों को पूर्ण रूप से अपनाना होगा। किसी भी संस्था का उन्नति करना इस बात पर निर्भर करता है कि उस संस्था के कार्यकर्ता संस्था के सिद्धान्तों का पालन करने वाले हैं या नहीं। आर्य समाज के सिद्धान्त बुद्धि सम्मत और तर्क की कसौटी पर खरे उतरने वाले हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के नियमों के रूप में हमें ऐसे सिद्धान्त दिए हैं जिनका पालन करने से सम्पूर्ण विश्व मानवता की ओर अग्रसर हो सकता है। इन नियमों को किसी व्यक्ति विशेष या सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार के लिए हैं।। इसलिए आर्य समाज का लक्ष्य निर्धारित करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के छठे नियम में उसकी रूप रेखा प्रस्तुत की है कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। इस महान् उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें अपने जीवन को शुद्ध बनाना होगा। हमारा प्रत्येक कार्य, व्यवहार आर्यत्व के अनुकूल होना चाहिए। हमारे उच्च व्यवहार, शुद्ध जीवन, आचार- विचार की पवित्रता के कारण ही दूसरे लोग हमारी ओर आकर्षित होंगे।

जिन महापुरूषों ने आर्य समाज के लिए तप और त्याग किया है उन महापुरूषों को हमें कभी नहीं भूलना चाहिए अपितु उनके जीवन एवं कार्यों से प्रेरणा लेकर आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, गुरूदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम आदि आर्य समाज की विभूतियों पर हमें गौरव होना चाहिए। शास्त्रकार ने कहा है कि महाजनो येन गताः सः पन्थाः अर्थात् महापुरूष जिस मार्ग पर चलते हैं उसी का अनुसरण हमें करना चहिए। इन लोगों ने आर्य समाज के कार्यों के लिए अपना-अपना बलिदान दिया है और आर्य समाज को सींचने का कार्य किया है। इन महापुरूषों को तथा इनके कार्यों को हमें हमेशा याद रखना चाहिए।

आर्य समाज की उन्नति के लिए आज हमें जातिवाद से ऊपर उठकर कार्य करना होगा। आर्य समाज की स्थापना को हुए इतने वर्ष बीत जाने पर भी आज हम जातिवाद से ऊपर नहीं उठ पाए हैं। इसी कारण आर्य समाज के प्रचार और प्रसार का क्षेत्र सीमित हो गया है। पहले लोग अपनी जात बिरादरी को छोड़ कर आर्य समाज में आते थे तो यही उनकी जात और बिरादरी बन जाती थी परन्तु आज लोगों में वह भावना नहीं है। इस भावना के न होने के कारण आज भी समाज में जाति प्रथा के आधार पर आरक्षण की बात होती है और आरक्षण प्राप्त करने के लिए दंगे भड़काए जाते हैं। आर्य समाज सदैव जातिवाद से ऊपर उठकर संगच्छध्वं, सवदध्वं की भावना से कार्य करने का सन्देश देता है। इसलिए आज हमें इन बातों से ऊपर उठकर समाज की उन्नति के लिए कार्य करना है जहां पर जाति के आधार पर किसी से भेदभाव न हो। सभी मनुष्य समाज के अंग हैं उनमें जन्म के आधार पर कोई भी छोटा बड़ा नहीं है। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वर्णव्यस्था पर बल दिया।

आर्य समाज ने अपनी संस्थाएं प्रचार के साधन के रूप में चलाई थी। आज संस्थाएं साधन न बनकर साध्य बन गई हैं। इसलिए आज आर्य समाज की संस्थाओं को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास करना चाहिए। वेद प्रचार के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए इन संस्थाओं का सदुपयोग होना चाहिए। आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए मिशनरी प्रचारकों को तैयार करना चाहिए। आर्य समाज में कार्यक्रमों की एक नई रूपरेखा तैयार करनी चाहिए और उस योजना के आधार पर कार्य करना चाहिए।

आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर हम सभी विचार करें और सोचें कि हम आर्य समाज के कार्यों को किस प्रकार आगे बढ़ा सकते हैं। हमें स्वाध्याय पर बल देना चाहिए, नए लोगों को जोड़ने का प्रयास करना चाहिए, आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में अपने बच्चों को लेकर जाना चाहिए, आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपनाने पर बल देना चाहिए, अपने आचरण खान-पान, व्यवहार को शुद्ध और पवित्र करना चाहिए। मेरी सम्मति में यदि हम इन बातों की ओर ध्यान दें और उन्हें क्रियान्वित करने का संकल्प लें तो आर्य समाज अपने कार्यक्षेत्र में और अधिक उन्नति कर सकता है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्यसमाज की प्रगति और महर्षि दयानन्द

ले.-मुनि मेधातिथि विद्यामार्त्तण्ड डा. मङ्गलदेव शास्त्री

वर्त्तमानकालीन आवश्कताओं की दृष्टि से आर्य समाज के दो ही कर्त्तव्य हो सकते हैं-(१) वेदों के वास्तविक स्वरूप का प्रकाश और (२) सहस्त्रों वर्षों से कृत्रिम (=रूढ़) तथाकथित वर्णव्यवस्था का आमूल उच्छेद। इनके बिना आर्य समाज की कोई वास्तविक आवश्यकता नहीं है। महर्षि दयानन्द की वास्तविक देन को भी हम इन्हीं दो बातों में देखते हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि आर्यसमाज उक्त लक्ष्यों से दूर रहा है। इसलिए उसकी प्रगति को हम नितरां निराशाजनक समझते हैं। जैसा कि हम नीचे दिखाने का यत्न करेंगे।

वेदों का महत्त्व

वेदों के महत्त्व के विषय में दो मत नहीं हो सकते। हमारे शास्त्रों में सुन्दर शब्दों में, कहीं-कहीं अर्थवाद-शैली की भाषा में भी, वेदों के महत्त्व का और उनकी परम-मान्यता का प्रतिपादन किया गया है।

आजकल के युग में वेदों के महत्त्व को हम कई दृष्टियों से आंक सकते हैं।

सबसे पहले ऐतिहासिक दृष्टि को ही लीजिए। इस दृष्टि से हमारा अभिप्राय भारतीय संस्कृति के विकास और इतिहास में वेदों के निर्विवाद रूप से अत्यधिक महत्त्व का है। भारतीय संस्कृति के इतिहास में वैदिक धारा का उद्गम वेदों से उसी तरह है, जिस तरह गङ्गा का उद्गम गङ्गोत्तरी से है। भारतीय संस्कृति की परम्परा सुवर्णमयी अटूट वैदिक श्रृङ्खला के सहारे ही आगे चलती रही है।

वेदों की विश्वजनीन दृष्टि-

परन्तु एक दूसरी दृष्टि से भी वेदों का महत्त्व है। उस दृष्टि को हम विश्वजनीन (दूसरे शब्दों में अधिमानव) दृष्टि कह सकते हैं। इसके अनुसार वेदों का दिव्य सन्देश, किसी संकीर्ण भेद-भावना के बिना, मानवमात्र के जीवन के लिए प्रेरणा और प्रकाश का देने वाला है। वह विश्व को प्रसन्नता और शान्ति प्रदान कर सकता है।

वेद मानव-जाति के लिए सार्वभौम तथा सार्वकालिक सन्देश के वाहक हैं।

मानवता के उत्कृष्ट महत्त्व का प्रतिपादन, जिस को प्रायः प्रारम्भ से ही भूल गये हैं, वैदिक संहिताओं में दर्शनीय है।

मनुष्य को दैवी स्तर पर ले जाने वाली उदात्त भावनाओं का अमृत-स्त्रोत वेदों की दिव्यवाणी की अद्‌भुत विशेषता है। अपने ग्रन्थों में विस्तारपूर्वक हम इसको दिखला चुके हैं। यही है वेदों के महत्त्व की विश्वजनीन या अधिमानव दृष्टि।

वेदों के महत्त्व के विषय में उपर्युक्त दोनों दृष्टियों का संकेत इस युग में हमें बहुत कुछ महर्षि दयानन्द के प्रसाद से प्राप्त हुआ है। इस दिशा में हमने अब तक क्या किया है और क्या कर्तव्य है, इस पर विचार हम आगे चल कर करेंगे। परन्तु, उससे पहले वैदिक धारा के ह्रास और उसके कारणों पर कुछ विचार कर लेना यहां आवश्यक है।

वैदिक धारा का ह्रास और उसके कारण-

विचारशील लोगों के लिए यह एक गंभीर समस्या है कि किसी बाह्य अत्याचार के बिना विश्वजनीन वैदिक धारा का ह्रास भारत में आज से सहस्त्रों वर्ष पहले से ही क्यों होने लगा था?

गम्भीर विचार के बाद पुष्कल प्रमाणों के आधार पर हमारी यह दृढ़भावना बन गई है कि वैदिक उदात्त भावनाओं का जीवन्त रूप, जो वास्तव में वैदिक संस्कृति के उषःकाल में अपने पूर्ण ओज में उपलभ्यमान था, उत्तरकालीन कर्मकाण्ड के जंजाल रूप श्रौतयज्ञों (जिस को भगवद्‌गीता के द्रव्ययज्ञ अर्थात् पुष्कल धन के व्यय से केवल धनियों द्वारा साध्य यज्ञ कहा गया है) के निष्प्राण रूप में विलुप्त हो गया। श्रौतयज्ञों का रूप बढ़ते-बढ़ते क्रमशः अति जटिल होता गया और अन्त में अर्थहीन, आदर्शहीन, कृत्रिम कर्मकाण्ड में परिणत हो गया।

उस विकृत रूप में उसका आधार जहाँ एक ओर दुर्बल मानव की कामात्मता पर था, वहाँ दूसरी ओर अन्धस्वार्थ लिप्सा और व्यावसायिक बुद्धि पर था।

मनुष्य की निम्न से निम्न अथवा छोटी से छोटी कामना, जैसे पशु, जमींदारी, प्रतिष्ठा, शत्रु-नाश, स्त्री-वशीकरण, नौकर पर काबू पाना आदि कामनाओं की पूर्त्यर्थ तथाकथित यज्ञ किये जा सकते थे।

न रजतं दद्याद् बर्हिषि पुरास्य संवत्सराद् गृहे रुदतीति श्रुतेः।
(कात्यायन श्रौतसूत्र १०,२,३४)

अर्थात्, यज्ञ में चांदी के रूप में दक्षिणा नहीं देनी चाहिए; क्योंकि ऐसा करने वाले के घर में एक वर्ष के अन्दर ही रोना पड़ जाता है। इसलिए-

तस्य हिरण्यं दक्षिणा, आग्नेयो वा एष यज्ञो भवति।
(शतपथ ब्राह्मण ३,२,-३,२८)

अग्निहोत्र यज्ञ में सोने की ही दक्षिणा देनी चाहिए, क्योंकि यह यज्ञ अग्नि देवता के लिए किया जाता है।

यह है उस अतिजटिल कृत्रिम वैदिक कर्मकाण्ड का आदर्शवाद। उसी आदर्शहीन कर्मकाण्ड का वैदिक महान् आदर्शों और वेद की विश्वजनीन दृष्टि पर अत्यन्त घातक प्रभाव पड़ा।

क्रमशः उस यान्त्रिक कर्मकाण्ड की उसमें प्रयुक्त मन्त्रों के अर्थ के साथ सामञ्जस्य की भावना नष्ट होने लगी। समझा जाने लगा कि अर्थ के जाने बिना केवल मन्त्रों के पढ़ देने मात्र से, मानो किसी जादू से, अभीष्ट फल की प्राप्ति हो जायगी। यहां तक कहा जाने लगा कि मन्त्रों का कोई अर्थ नहीं होता, वे लोक-प्रचलित शाबर आदि मन्त्रों के समान, पढ़ने मात्र से कार्य-सिद्धि कर देते हैं।

ऐसी स्थिति में वेदों को सब किसी से छिपाना भी आवश्यक हो गया। विधान किया गया कि स्त्री और शूद्रों को वेद नहीं पढ़ाना चाहिए और यदि बेचारे शूद्र के कानों में धोखे से भी वेदमन्त्र पड़ जाये, तो उसके कानों में राँगा भरवा देना चाहिए तथा उच्चारण करने पर जिह्वा काट देनी चाहिए। ऐसी विचार-संकीर्णता का उदाहरण संसार में अन्यत्र नहीं मिलेगा।

उक्त संकीर्णता के कारण ही अन्ततो गत्वा वैदिक श्रौतयज्ञों की प्रथा स्वयं ही अपनी मौत मर गयी; किसी बाह्य आक्रमण के कारण नहीं, अपितु अपनी ही आन्तरिक निस्सारता के कारण।

मनीषी लोग उसके विरुद्ध हो गये और उस पर आक्रमण होने लगे। वेदाध्ययन में अत्यन्त शैथिल्य का आ जाना स्वाभाविक था।

वेद और महर्षि दयानन्द-

इस प्रकार चिरकाल से वेदसूर्य के अस्त-प्राय होने पर सौभाग्य से महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। उन्होंने अन्य क्षेत्रों के समान वेदों के सम्बन्ध में भी जो नवीन प्रकाश हमें दिया है वह सब प्रकार से अद्‌भुत है। विस्तार से उस प्रकाश के व्यापक स्वरूप को यहां न दिखा कर, इतना कहा जा सकता है कि ब्राह्मणग्रन्थों से प्राप्त श्रौतकर्मकाण्ड के महारण्य से बचाकर मानवमात्र के उत्थान के लिए परमावश्यक वेदार्थ-ज्ञान के प्रति जनता को प्रवृत्त करना आचार्य का अतिमहान् कार्य था। परन्तु, बड़े खेद के साथ हम देख रहे हैं कि आर्य समाज भी इस प्रशस्त मार्ग पर न चल कर सर्वनाशक निरर्थक कृत्रिम याज्ञिक प्रवाह में ही बह रहा है।

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।

इस उपनिषद्-वाक्य के अनुसार आर्य समाज के तथाकथित वेदपारायण यज्ञ धन और समय का व्यर्थ नाश करते हुए निश्चय ही आर्यजनता को पथभ्रष्ट कर देंगे। उनके स्थान में, जैसा हमने अन्यत्र बतलाया है, वेद-पारायण-सत्र अथवा वैदिक स्वाध्याय सत्र यदि चलाये जायें, तो एक व्यापक अवर्णनीय लाभ हो सकता है। उनसे जहां दुरूह वैदिक समस्याओं का समाधान होगा, वहां साथ ही संसार को एक नवीन वैज्ञानिक पद्धति का प्रकाश भी मिलेगा।

स्थानाभाव से इस विषय को यहीं समाप्त कर हम अब कृत्रिम वर्ण-व्यवस्था के विषय को लेते हैं।

कृत्रिम रूढ़ वर्ण व्यवस्था-

हमारा दृढ़ विश्वास है कि इस प्रश्न के साथ न केवल आर्य समाज के, वरन् हिन्दू-समाज के भी जीवन-मरण का संबन्ध है। वर्ण-व्यवस्था का संबन्ध ऋग्वेद के उत्तर-कालीन (क्योंकि ऋग्वेद के वंश-मूलक प्राथमिक भाग में यह मन्त्र नहीं है) अंश से है। ''ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्'' इस वेदमन्त्र का 'मौलिक' अभिप्राय वही रहा है, जो आर्यसमाज समझता है। पर, यह परम सत्य है कि अधिकतर इसका अभिप्राय प्राचीन विद्वानों में भी प्रायः

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वेदोद्धारक-शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती

ले.-श्री आचार्य धर्मदेव विद्यामार्तण्ड (देवमुनि वानप्रस्थ)

मैंने इस लेख के प्रारम्भ में शीर्षक रूप में 'वेदोद्धारक-शिरोमणि' इस विशेषण का स्वनामधन्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम के साथ प्रयोग जान-बूझ कर किया है, क्योंकि कलियुग के सब सुप्रसिद्ध आचार्य श्री शङ्कराचार्य, श्री रामानुजाचार्य, श्री मध्वाचार्य (स्वा० आनन्दतीर्थ) श्री वल्लभाचार्य, सायणाचार्य आदिकृत ग्रन्थों का अनुशीलन करने पर मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि महर्षि दयानन्द जी को ही वेदोद्धारक-शिरोमणि कहा जा सकता है, जिन्होंने वेदों का सच्चा स्वरूप जनता के सम्मुख रखकर चिरकाल से लुप्त सत्य सनातन वैदिक धर्म का शुद्ध रूप में पुनरुद्धार किया, अन्य किसी आचार्य को नहीं।

मैं कैसे इस परिणाम पर पहुँचा हूँ और महषि दयानन्द जी तथा अन्य आचार्यों की वेदविषयक मान्यताओं में क्या भेद हैं, जो मैं यह मानता हूँ कि महर्षि दयानन्द जी को वेदोद्धारक-शिरोमणि कहा जा सकता है, इन प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर मैं इस लेख द्वारा देने का यत्न करूंगा।

यह ठीक है कि श्री शङ्कराचार्य, रामानुजाचार्य आदि सभी प्रसिद्ध आचार्यों ने वेदों को परम प्रमाण माना है, किन्तु अपने सिद्धान्तों के समर्थन के लिये उन्होंने अधिकतर उपनिषद्, वेदान्तसूत्र और भगवद्गीता का आश्रय लिया है न कि मूल वेदसंहिताओं का, यह उनके ग्रन्थों के पढ़ने वाले जानते हैं। श्रुति के नाम से भी इन आचार्यों ने प्रायः सर्वत्र उपनिषदों के वचन दिये हैं। हां, द्वैतमत के प्रबल प्रचारक श्री मध्वाचार्य (स्वा० आनन्दतीर्थ) ने वेदमन्त्रों के कई प्रमाण जीवेश्वर भेद आदि के समर्थन में दिये तथा ऋग्वेद के प्रथम ४० सूक्तों का श्लोकबद्ध संक्षिप्त भाष्य भी किया, तथापि पौराणिक संस्कार-विषयक इस भाष्य में भी विशुद्ध एकेश्वरवाद के स्थान में विष्णु, लक्ष्मी आदि देवी-देवताओं की पूजा का अनेक स्थलों में विधान पाया जाता है। वेदाधिकार भी प्रायः इन आचार्यों ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य कुलोत्पन्न पुरुषों तक ही सीमित कर दिया और शूद्रकुलोत्पन्न पुरुष और समस्त स्त्रियों को उस अधिकार से न केवल वञ्चित ही कर दिया, अपितु यहां तक लिखा-

इतश्च न शूद्रस्याधिकारः। यदस्य स्मृतेः श्रवण ध्ययन-प्रतिषेधो भवति। वेदश्रवण-प्रतिषेधी वेदा ध्ययनार्थ-प्रतिषेधस्तदर्थज्ञानानुष्ठानयोश्च प्रतिषेधः शूद्रस्य स्मर्यते। श्रवणप्रतिषेधस्तावत् 'अथास्य (शूद्रस्य) वेदमुपशृण्वतस्त्र-पुजतुभ्यां श्रोत्रप्रतिपूरणमिति। भवति च वेदोच्चारणे जिह्वाच्छेदः। धारणे शरीरभेदः।

(ब्रह्म० सूत्र० शाङ्कभाष्ये १-३-३८)

सारांश यह कि शूद्र को वेद का अधिकार नहीं, क्योंकि स्मृति में उसके लिये वेद के सुनने, पढ़ने और अर्थज्ञान सम्पादन करने का सर्वथा निषेध है और यह कहा है कि यदि कोई शूद्र वेद को समीपता से श्रवण कर ले, तो उसके कानों को सीसे और लाख से भर देना चाहिये, वेद के मन्त्र का यदि वह उच्चारण कर ले, तो उसकी जिह्वा काट देनी चाहिये और यदि धारण वा याद कर ले, तो उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डालने चाहियें।

विशिष्टाद्वैत सम्प्रदाय के आचार्य श्री रामानुज स्वामी ने भी इसी बात को लिखा है कि-

'शूद्रस्य वेदश्रवण-तद-ध्ययनतदर्थानुष्ठानानि प्रतिषि-ध्यन्ते। पद्यु ह वा एतत् श्मशानं यच्छूद्रः तस्मात् शूद्रसमीपे। नाध्यतेव्यम्।'

(ब्रह्म सूत्रस्य श्रीभाष्ये रामानुजाचार्यकृते पृ० ३२२)

अर्थात्-शूद्र को वेद के सुनने, अध्ययन करते और उसके अर्थ को जानकर अनुष्ठान करने का निषेध है। शूद्र चलता फिरता श्मशान है। अतः उसके समीप वेद का अध्ययन नहीं करना चाहिये।

ऐसा ही श्री मध्वाचार्य, श्री वल्लभाचार्य, श्री निम्बार्काचार्य, सायणाचार्य तथा अन्य मध्यकाल के प्रायः सभी सुप्रसिद्ध आचार्यों ने लिखा है। स्त्रियों के अधिकार के विषय में भी श्री शङ्कराचार्य जी ने लिखा है कि-

'दुहितुः पाण्डित्यं गुहतन्त्र-विषयमेव वेदेऽनधिकारात्'।

(बृहदारण्यकोपनिषच्छां-करभाष्ये ६,४,१६)

अर्थात्-उपनिषद् में यह जो लिखा है कि "अथ य इच्छेत् दुहिता में पण्डिता जायेत" यहां कन्या के पाण्डित्य का अर्थ केवल गृहकार्यविषयक पाण्डित्य है, क्योंकि उसका वेद में अधिकार नहीं। ऐसा ही श्री रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, सायणाचार्य तथा अन्य प्रायः सभी मध्यकालीन सुप्रख्यात आचार्यों ने लिखा है।

श्री मध्वाचार्य ने इस विषय में कुछ उदारता दिखाते हुए लिखा हैं-

आहुरप्युत्तमस्त्रीणाम् अधिका-रन्तु वैदिके यथोवंशी यमी चैव शच्याद्याश्च तथाऽपराः।

(ब्रह्मसूत्राणुव्याख्याने पृ० ८७)

अर्थात् उत्तम स्त्रियों का वैदिक शास्त्र के पढ़ने में अधिकार विद्वान् लोग बतलाते हैं जैसे उर्वशी यमी, शची इत्यादि प्राचीन काल की ऋषिकाएँ हुई हैं। एक अन्य स्थल पर भी श्री मध्वाचार्य ने लिखा है-

वेदा अप्युत्तमस्त्रोभिः कृष्णाद्याभिरिहाखिलाः।
उत्तमस्त्रीणां तु न शूद्रवत्।।

(ब्रह्मसूत्राणुभाष्य)

अर्थात् उत्तम स्त्रियों को द्रौपदी आदि की तरह सब वेदों का अध्ययन करना चाहिये। उत्तम स्त्रियों को शूद्रों की तरह वेदाध्ययन का निषेध नहीं। इस प्रकार स्त्रियों के वेदाधिकार को उत्तम स्त्रियों के लिये स्वीकार करने की उदारता श्री मध्वाचार्य (स्वा. आनन्दतीर्थ) ने दिखाई; किन्तु शूद्रों के वेदाधिकार का उन्होंने भी अन्य आचार्यों की तरह निषेध किया।

वैदिक यज्ञों में पशुहिंसा का भी इन सभी आचार्यों ने विधान "अशुद्धमिति चेन्न शब्दात्" इस वेदान्तसूत्र के भाष्य में तथा अन्यत्र माना। ऐसे ही इन आचार्यों की वेदविषयक कई अशुद्ध और संकुचित धारणाएं हैं, जिनके कारण इन्हें आदर्श वेदोद्धारक नहीं माना जा सकता। मूल वेदों को इनमें से बहुतों ने केवल यज्ञयागादि-कर्मकाण्डपरक ही समझा। अध्यात्मविद्या तथा ब्रह्मविद्या के लिये उन्होंने उपनिषदों का आश्रय लिया। इस लिये मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती को वेदोद्धारक-शिरोमणि मानता हूँ। ऐसे समय में जन्म ले कर जब देश-विदेश में सर्वत्र वेदविषयक अज्ञान फैला हुआ था, जब भारत के बड़े-बड़े विद्वान् भी वेदों के वास्तविक अर्थों से अनभिज्ञ होकर उनकी क्रियात्मक उपेक्षा कर रहे थे, जब वेदों को सहस्त्रों देवी-देवताओं की पूजा का प्रतिपादक तथा जातिभेद, अस्पृश्यता, बालविवाह और यज्ञों में पशुहिंसा आदि का समर्थक मानते थे, जब पवित्र वेदों का स्थान अधिकतर रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, पुराणादि ने ले लिया था, महर्षि दयानन्द ने फिर 'वेदों की ओर चलो, वेद सब सत्य-विद्याओं के पुस्तक हैं, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है,' का सिंह-नाद करके जनता में जो अद्भुत जागृति पैदा कर दी, पवित्र वेदमन्दिर के द्वार को-

'यथेमां वाचं कल्याणी-मावदानि जनेभ्यः'। (यजु० २६-२)

इस वैदिक आदेशानुसार सब नर-नारियों के लिये खोलने की जो उदारता दिखाई, वेदों की सार्व-भौमिक, सार्वकालिक, युक्ति-युक्त और वैज्ञानिक शिक्षाओं को जिस उत्तम रूप से जो जगत् के सम्मुख रखकर उस वेदभानु की ज्ञान-किरणों से समस्त अज्ञानान्धकार को छिन्न-भिन्न करने का अत्यन्त अभिनन्दनीय कार्य किया, उसका किन शब्दों में वर्णन किया जाए। वैदिक ज्ञानप्रसार-विषयक महर्षि दयानन्द के उपकार अत्यन्त महान् और अनुपम हैं, यदि ऐसा कहा जाए तो इसमें अणुमात्र भी अत्युक्ति न होगी। वेदों को केवल कर्मकाण्ड-परक और यज्ञों में पशुहिंसा-प्रतिपादक समझ कर अच्छे-अच्छे विचारक उनसे विमुख हो रहे थे। महर्षि ने वेदों के सर्वशास्त्रसम्मत महत्त्व को बता कर उन्हें वेदाध्ययन में पुनः प्रवृत्त किया।

महर्षि दयानन्द के वेदविषयक मन्तव्य-

(१) महर्षि दयानन्द ने अत्यन्त प्रबल युक्तियों और प्रमाणों से मानवसृष्टि के आरम्भ में ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता को सिद्ध करते हुए अनेक कसौटियों से प्रमाणित किया कि ईश्वरीय ज्ञान वेद ही है, जिसकी शिक्षाएँ सर्वथा पवित्र

सार्वभौम युक्ति तथा तत्त्वज्ञानसम्मत है।

(२) वेद ईश्वरीय ज्ञान है और मानवसृष्टि के प्रारम्भ में प्रकाशित होने के कारण नित्य है। अत: उनमें अनित्य इतिहास नहीं हो सकता। वेदों में पाये जाने वाले वसिष्ठ, जमदग्नि, विश्वामित्र, अत्रि, कवि इत्यादि शब्द व्यक्तिविशेष-वाचक नहीं, किन्तु गुणविशिष्ट व्यक्ति तथा पदार्थसूचक हैं। जैसे कि 'प्राणो वै वसिष्ठ ऋषि: (शत० ८,१,१,६) प्रजापतिर्वै वसिष्ठ: (कौषीतकी ब्रा० २५,२२६,१६). प्रजापतिर्वै जमदग्नि: (शत० १३,२,२,१४), श्रोत्रं वै विश्वामित्र ऋषि: (शत० ८,१०,२,६), मनो वै भरद्वाज ऋषि: (शत० ८,१,१,६), प्राणो वा अङ्गिरा: (शत० ६,१,२,२८), कवि इति मेधाविनाम (निघ० ३,५) इत्यादि आर्ष वचनों से सिद्ध होता है।'

(३) वेदों के शब्द योगिक वा योगरूढ़ हैं, केवल रूढ़ नहीं जैसे कि-

'सर्वाणि नामान्याख्यातजानि इति नैरुक्तसमय:।'

(निरुक्त १,४,१२)

नाम च धातुजमाह निरुक्ते, व्याकरणे शकटस्य च तोकम्।

(महाभाष्य ३,३,१)

इत्यादि में बताया गया है।

उन्हें लौकिक संस्कृत के अनुसार रूढ़ मानकर उनकी व्याख्या करना ठीक नहीं। यौगिक होने के कारण अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण, यम, मातरिश्वा, रुद्र, देव आदि शब्द आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक दृष्टि से अनेकार्थक हैं।

(४) वेद विशुद्ध रूप से एकेश्वरवाद का प्रतिपादन करने वाले हैं। अग्नि, मित्र, इन्द्र, वरुण आदि शब्द जैसे कि-

'इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहु:- एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।।'

(ऋ. १,१६४,४६)

इत्यादि मन्त्रों को उद्धृत करते हुए बताया गया है, प्रधानतया परमेश्वरवाचक हैं। आधिभौतिक क्षेत्र में वे ज्ञानी ब्राह्मण, ऐश्वर्य सम्पन्न राजा, जीव, पुरोहित, अज्ञानान्धकारनिवारक श्रेष्ठपुरुष इत्यादि के वाचक भी हैं। ८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य (मास), इन्द्र (विद्युत्) और प्रजापति (यज्ञ) में ३३ तत्त्व प्रकाशदायक तथा लाभकारी होने के कारण वेदादिशास्त्रों में देव कहे गये हैं, किन्तु उपास्य परमदेव एक परमेश्वर ही है।

(५) यज्ञ शब्द जिस यज् धातु से बनता है उसके देवपूजा, सङ्गतिकरण और दान ये तीन अर्थ हैं जो अपने से बड़ों, बराबर स्थिति वालों और हीनों (छोटों) के प्रति कर्तव्य के सूचक हैं। अत: अपने तथा जगत् के कल्याण के लिये किया गया प्रत्येक शुभकार्य यज्ञ कहाता है। यज्ञों में पशुहिंसा सर्वथा वेदविरुद्ध है। यज्ञ के लिये वेदों में सैंकड़ों स्थानों पर 'अध्वर' शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ ही "अध्वर इति यज्ञनाम ध्वरति हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेध:" (निरुक्त १,८) इत्यादि यास्काचार्यकृत निरुक्तानुसार हिंसारहित शुभ-कर्म है।

(६) वेदों में अध्यात्मविद्या के अतिरिक्त भौतिक विद्याओं का भी बीजरूप से उपदेश है। ज्योतिष, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, समाजशास्त्र, राजनीति-विद्या, विज्ञानादि का मूल वेदों में विद्यमान है। महर्षि दयानन्द द्वारा अभिमत ये मन्तव्य प्राचीन ऋषिमुनियों द्वारा सम्मत है और उनके समर्थन में सैंकड़ों प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। पर लेखविस्तारभय से ऐसा करना यहाँ सम्भव नहीं।

महर्षि दयानन्द की वेदार्थ-विषयक शास्त्र तथा तर्कसम्मत इस क्रान्ति का देश-विदेश के निष्पक्षपात विद्वानों पर क्या प्रभाव पड़ा और किस प्रकार उनको अपने पुराने विचार बदलने को विवश होना पड़ा, यह मैंने 'ऋषि वेदभाष्यकार के रूप में' इस नाम के निबन्ध में विस्तार से बताया है, जिसके प्रकाशन की व्यवस्था की जा रही है। यहाँ तो इतना ही लिखना पर्याप्त है कि सुप्रसिद्ध जर्मन विद्वान् प्रो. मैक्समूलर, तथा नोबल पुरस्कार-विजेता और Great Secret (महान् रहस्य) नामक उत्तम ग्रंथ के लेखक मैटर्लिक-दोनों ने वेदों को ज्ञान का विशाल भण्डार बताया है, जिसे मानवसृष्टि के प्रारम्भ में ऋषियों पर प्रकट किया गया।

Vast reservoir of the Wisdom that some where took shape simultaneously with the origin of man' (Materlink in the 'Great Secret')

रूस के ऋषि टालस्टाय, अमेरिका के सुप्रसिद्ध विचारक थोरियो, आयर के जेम्स कजिन्स इत्यादि पाश्चात्य विद्वानों, जगद्विख्यात योगी श्री अरविन्द जी, महाविद्वान् और योगी श्री कपाली शास्त्री जी, श्री माधव पुण्डलीक पण्डित जी आदि भारतीय विद्वान् योगियों, पारसी विद्वान् श्री दादाजान जी बी.ए.,एल.-एल-बी. तथा सर सय्यद अहमद खां, सर यामिनखान आदि मुसलमान विद्वानों पर महर्षि दयानन्द के वेदादिविषयक विचारों तथा उन के वेदभाष्यादि का अद्भुत प्रभाव पड़ा।

पण्डितराज, सारस्वतसार्वभौम, सामवेद तथा यजुर्वेद भाष्यकार स्वामी भगवदाचार्य जी, कनखल हरिद्वार के महामण्डलेश्वर चातुर्वर्ण-भारतसमीक्षा, ऋग्-यजु:-साम-अथर्वसंहितोपनिषछतकों के लेखक परमहंस परिव्राजक स्वा. महेश्वरानन्द जी गिरि, सनातनधर्म कालेज मुलतान के भू० आचार्य विद्वच्चूड़ामणि श्रद्धेय पं. चूडामणि जी शास्त्री (स्व. विज्ञान-भिक्षु जी, सनातनधर्ममण्डल देहली के प्रधान पं. गङ्गप्रसाद जी शास्त्री इत्यादि पर महर्षि दयानन्द के वेदविषयक इन मन्तव्यों का यह प्रभाव पड़ा कि उन्होंने स्त्रीशूद्रादि सब के वेदाधिकार के सिद्धान्त का अपने ग्रंथों में खुले तौर पर समर्थन किया, गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था के सिद्धान्त का प्रबल समर्थन अनेक ज्ञानस्त्रीय प्रमाणों से किया और महर्षि दयानन्द जी को कलियुग में 'आस्तिक-शिरोमणि' बताया (स्वा: भगवदाचार्य जी सामसंस्कारभाष्य की भूमिका में)। महामण्डलेश्वर स्वा. महेश्वरानन्द जी गिरि ने-

बहूनामनुग्रही न्याय्य:, समाज-राष्ट्ररक्षक:।

महर्षि-श्रीदयानन्दो दम्भपा-खण्डमर्दक:।।

वेदधर्मप्रचाराय, मर्दनाय विधर्मिणाम्।

आर्याणां संघशक्त्यर्थ: प्रयासो येन वै कृत:।।

तस्य महानुभावस्य, सम्मतिश्चास्ति कृष्णवत्।

गुणकर्मानुसारेण, चातुर्वर्ण्य-व्यवस्थिति:।।

चातुर्वर्ण्यभारतसमीक्षा, महा-मण्डलेश्वर स्वा० महेश्वरानन्द जी गिरिकृत् द्वितीयखण्ड पृ० १५)

इन श्लोकों में स्वामी दयानन्द जी को महर्षि, समाजराष्ट्ररक्षक दम्भपाखण्ड-मर्दक, वेद धर्म-प्रचारक और आर्यो की सङ्घशक्ति का वर्धक कहा है और यह कहा है कि वर्णव्यवस्था के विषय में उनकी श्रीकृष्ण जी महाराज जैसी सम्मति है कि वर्णव्यवस्था गुणकर्मानुसार होती है।

स्व० श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति तथा अन्य आर्य विद्वानों से जीवनभर शास्त्रार्थ करने वाले महामहोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी को भी लिखना पड़ा कि-

वेद के वैज्ञानिक युग के व्याख्याकार श्री स्वामी दयानन्द जी हैं। उन्होंने वेद के गौरव की ओर आर्यजाति की दृष्टि बहुत कुछ आकृष्ट की है। इस कारण से उनका भी उपकार विशेष माननीय है। (वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति' पं० गिरिधर शर्मा जी कृत पृ० १८)

अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण आदि शब्दों से स्वा० भगवदाचार्य जी तथा स्वा० महेश्वरानन्द जी ने प्रधानतया ईश्वर का तथा 'देवा:' का अर्थ विद्वान् ग्रहण किया। यह सब महर्षि दयानन्द का सनातनधर्माभिमानी विद्वानों पर अद्भुत प्रभाव सूचित करता है। ऐसे वेदोद्धारक-शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती को हमारा कोटिश: प्रणाम हो। इस लेख का उपसंहार मैं स्वनिर्मित निम्न श्लोकों द्वारा करना उचित समझता हूँ।

१. निखिलनिगमवेत्ता, पापता-पापनेता,

रिपुनिचयविजेता, सर्व-पाखण्डभेत्ता।

अतिमहित-तपस्वी, सत्यवादी मनस्वी,

जयति स समदर्शी, वन्दनीयो महर्षि:।।

२. प्रथितधवलकीर्ति:, शुद्ध-धर्मस्य मूर्ति:

प्रसृतनिगमरीति:, शत्रुवर्गेऽप्यभीति:।

अनुसृतशुभनीति:, वेदशास्त्रेष्वधीती

विवुधगणवरेष्यो लोक-संरक्षकेषु

३. अधिकतम उदारो धर्मसं-बोधकेषु

श्रुतिविहितविचारो लोक-संरक्षकेषु।

विदितनिगमसारो ब्रह्मचार्य-अगण्यो

जयति स कमनीयो वन्दनीयो महर्षि:।।

पृष्ठ 4 का शेष-आर्यसमाज की प्रगति...

वही लिया जाता रहा है जो रूढ़ अथवा जन्मना वर्ण-व्यवस्था के मूर्खतापूर्ण अर्थ के अनुकूल था। यह ठीक है कि ''अभ्यर्हितं पूर्व निपततीति'' इस वार्त्तिक के रहते हुए, वार्तिककार (कात्यायन) ने ''ब्राह्मण-क्षत्रिय-विट्शूद्राः'' इस प्रयोग के लिए ''वर्णानामानुपूर्व्येण'' यह वार्त्तिक बना कर वर्णों में जन्मना नीच-ऊंच के भाव को न मानते हुए उनमें परस्पर समानता की भावना को ही माना है।

ऐसी परिस्थिति के रहते हुए भी, प्रायः 'समस्त' संस्कृति-वाङ्मय में वर्णों में ''पारस्परिक अधरोत्तर भावना'' को ही माना गया है। इसी कारण से वर्ण-व्यवस्था का सिद्धान्त कभी भी समस्त भारतवर्ष में लागू नहीं हुआ। तथाकथित 'शूद्रों' ने भी कभी इस को नहीं माना। वर्ण का स्थान इसीलिए जातियों ने ले लिया और आज के भारतवर्ष में वह प्रायः मर चुका है और दिन-प्रतिदिन तत्तद्-जातियों के संघटन बन रहे हैं। राजनीतिक क्षेत्र भी इससे व्याप्त है। विधान-सभाओं या संसद के चुनावों में ''हरिजन मुसलिम भाई-भाई'' जैसे नारे किसने नहीं सुने हैं? डा. अम्बेदकर का दल लाखों की संख्या में प्रतिवर्ष बढ़ रहा है।

प्राचीन भारत में उक्त विषाक्त वर्ण-व्यवस्था को बल देने के लिए ही 'शर्मा', 'वर्मा', 'गुप्त' जैसे शब्द गढ़े गये थे, जो अब तक हमसे चिपके हुए हैं। ब्रह्मचारी के यज्ञोपवीत, मेखला, दण्ड आदि में तत्तद् वर्ण के अनुसार भेद को शास्त्रों में पढ़कर अब भी हमें लज्जित होना पड़ता है।

कर्म और आचरणों के आधार पर जिस वास्तविक वर्ण-व्यवस्था को कभी अनिर्ज्ञातकाल में, भारत में चलाने का प्रयत्न किया गया था, वह तो कभी की निर्मूल हो चुकी है। अब समय आ गया है कि हम ''उसका नाम लेना भी भूल जाएँ'' और राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति के उसकी ईश्वर-प्रदत्त प्रवृत्ति के अनुसार फूलने और फलने का हृदय से स्वागत करें। यही वैदिक धर्म का वास्तविक स्वरूप है। यही आर्य समाज और आर्यसमाजियों का निश्छल-भाव से मन्तव्य और कर्त्तव्य होना चाहिए।

नवरात्रों के उपलक्ष्य में वेद कथा का आयोजन

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में दिनांक 6 अप्रैल से 14 अप्रैल तक विक्रमी नव संवत् एवं नवरात्रों के उपलक्ष्य में वेदकथा का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर महात्मा चैतन्यमुनि जी के प्रवचन होंगे। आप सभी अपने परिवार एवं इष्टमित्रों सहित इस कार्यक्रम में भाग लेकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

-सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन

आर्य समाज वेद मंदिर गांधी नगर-1 जालन्धर का चुनाव

आर्य समाज वेद मन्दिर गांधी नगर-1 जालन्धर का चुनाव 31 मार्च 2019 को यज्ञ के पश्चात सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से श्री राजपाल जी को आर्य समाज का प्रधान चुना गया तथा कार्यकारिणी बनाने का अधिकार दिया गया। प्रधान श्री राजपाल ने श्री अनिल कुमार को मन्त्री तथा श्री ईश्वर दास सपरा को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया। श्री भारत भूषण को उपमन्त्री, श्री अशोक कुमार को उपप्रधान तथा पंड़ित प्रिंस को पुरोहित प्रचारक बनाया गया। श्री जोगिन्दर पाल, श्री जगदीश लाल और श्री तिलक राज को आर्य समाज का संरक्षक बनाया गया।

-अनिल कुमार आर्य मन्त्री आर्य समाज

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा। **-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा**

पृष्ठ 8 का शेष-डी.ए.एन.कालेज़...

संत बलवीर सिंह सींचेवाल, नवांशहर के डी.सी. श्री विनय बुवलानी, एस.डी.एम. डा. विनीत कुमार जी, ए.डी.सी. स. सरबजीत सिंह वालिया जी, नगर कौंसिल अध्यक्ष श्री ललित मोहन पाठक जी, आर्य समाज नवांशहर के महामंत्री श्री जिया लाल जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री कुलवन्त राय शर्मा, श्री ललित शर्मा जी, श्री वीरेन्द्र सरीन जी, श्री युगल किशोर दत्ता, श्री सुशील पुरी जी, श्री अक्षय तेजपाल जी, बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर की प्रिंसीपल तरुणप्रीत कौर, आर.के. आर्य कालेज नवांशहर के प्रिंसीपल श्री संजीव डाबर जी, डी.ए.एन. कालेज आफ एजुकेशन फार वूमैन की प्रिंसीपल गुरविन्द्र कौर, डी.ए.एन. आर्ट एंड क्राफट कालेज की प्रिंसीपल आशा शर्मा जी,दोआबा आर्य सी.सै.स्कूल नवांशहर के प्रिंसीपल श्री राजेन्द्र सिंह गिल एवं उपरोक्त सभी शिक्षण संस्थाओं का स्टाफ भी उपस्थित था।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग...

नाम है। जिस व्यक्ति ने अपने अन्दर से काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि वासनाओं को समूल नष्ट कर दिया है उसी के हृदय में सद्गुणों का प्रकाश हो सकता है और वही सच्चा आर्य बन सकता है।

अन्त में धवन परिवार की ओर से गरीबों को राशन वितरित किया गया। यह आर्य समाज समय समय पर गरीबों में राशन वितरित करती रहती है। इसी तरह आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर के सदस्य भी यथायोग्य इस कार्य में अपना पूरा पूरा सहयोग करते हैं। इस अवसर पर डा. रामेश्वर सिंह, स. अवतार सिंह, सर्वहितैषी भाटिया, रविन्द्र मोंगा, शांतिभूषण शर्मा, सुरिन्द्र वोहरा, अभिषेक तथा महिला सदस्यों में से सुचित्रा छाबरा, सजना, रानी, उपस्थित थे।

-विपिन धवन

आर्य समाज पटियाला का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज चौक पटियाला का वार्षिक उत्सव एवं ऋग्वेद पारायण महायज्ञ दिनांक 8 अप्रैल 2019 सोमवार से 14 अप्रैल 2019 रविवार तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य सोमदेव जी अजमेर के प्रवचन तथा श्री मोहित शास्त्री जी बिजनौर के भजन होंगे। आप सभी सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

राज कुमार सिंगला प्रधान आर्य समाज

महर्षि दयानन्द जीवन सचित्र संग्रहालय का शुभारम्भ

महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर ढन्न मोहल्ला जालन्धर में 14 अप्रैल 2019 को बैशाख मास की पावन संक्रन्ति के अवसर पर महर्षि दयानन्द जी के सचित्र जीवन संग्रहालय का शुभारम्भ किया जाएगा। इस अवसर पर महात्मा चैतन्य मुनि जी, माता सत्याप्रिया, श्री सुरेश शास्त्री, भजन गायिका श्रीमती रश्मि घई, भजनोपदेशक श्री राजेश अमर प्रेमी जी विशेष रूप से पधार रहे हैं। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 8:00 बजे यज्ञ के द्वारा किया जाएगा। यज्ञ के पश्चात 12:30 बजे तक कार्यक्रम चलेगा जिसमें विद्वानों के भजन एवं प्रवचन होंगे। संग्रहालय का उद्घाटन श्री ओम प्रकाश अग्रवाल एवं श्री कैलाश गुप्ता जी के करकमलों द्वारा किया जाएगा।

आप सभी धर्मप्रेमी महानुभाव सपरिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर होगा।

राजिन्द्र देव विज महामन्त्री महर्षि दयानन्द मठ

वार्षिक उत्सव का आयोजन

आर्य समाज वेद मन्दिर गांधी नगर-1 का वार्षिक उत्सव 26 अप्रैल से 28 अप्रैल 2019 तक मनाया जा रहा है जिसमें पं. विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन तथा श्री अरूण वेदालंकार के मधुर भजन होंगे। सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वह इस अवसर पर परिवार सहित धर्म लाभ उठावें। **-अनिल कुमार आर्य मन्त्री आर्य समाज**

दयानन्द मठ दीनानगर में वेद विज्ञान सम्मेलन

संत शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के 119 जन्मोत्सव के अवसर पर दयानन्द मठ दीनानगर में दिनांक 11 अप्रैल से 13 अप्रैल तक वेद विज्ञान सम्मेलन का आयोजन किया गया है। आप सभी धर्मप्रेमी महानुभाव इसमें सादर आमन्त्रित हैं।

-स्वामी सदानन्द अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर

रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018–20 RNI No. 26281/74

डी.ए.एन. कालेज आफ एजुकेशन नवांशहर में पर्यावरण पर संगोष्ठी का आयोजन

डी.ए.एन.कालेज आफ एजुकेशन नवांशहर में नार्थ इंडिया में नवांशहर के पर्यावरण में अब्बल आने पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कालेज उपप्रधान श्री विनोद भारद्वाज, पद्मश्री संत बलवीर सिंह सींचेवाल, पंजाब सरकार के भूतपूर्व चीफ सैक्रेटरी श्री सुबोध चन्द्र अग्रवाल, नैशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के अध्यक्ष जस्टिस प्रीतम पाल जी, नवांशहर के डी.सी. श्री विनय बुवलानी जी, एस.डी.एम. डा. विनीत कुमार जी एवं अन्य भाग लेते हुये जबकि चित्र दो में नैशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के अध्यक्ष जस्टिस प्रीतम पाल जी को सम्मानित करते हुये डी.ए.एन. कालेज आफ एजुकेशन नवांशहर के उपप्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी, आर्य समाज के महामंत्री श्री जिया लाल जी शर्मा एवं अन्य।

आज विश्व का सर्वाधिक चर्चित और चिन्तनीय विषय पर्यावरण है। पर्यावरण प्रदूषण विश्व की प्रमुख समस्या है। पर्यावरण पर एक संगोष्ठी 26 मार्च 2019 को डी.ए.एन. कालेज आफ एजुकेशन नवांशहर में आयोजित की गई जिसमें नैशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के अध्यक्ष जस्टिस प्रीतम पाल जी विशेष रूप से पधारे। यह आयोजन नवांशहर को नार्थ इंडिया में पर्यावरण में अव्वल रहने पर किया गया था। अपने अध्यक्षीय भाषण में जस्टिस प्रीतमपाल जी ने कहा कि हम स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के उपकारों को कदापि भूल नहीं सकते। उन्होंने बताया कि मेरे घर में पिछले लगभग 50 वर्षों से प्रतिदिन हवन हो रहा है। हवन के पश्चात ही घर के अन्य कार्य शुरू होते हैं। उन्होंने बताया कि यदि सोच और विचार अच्छे होंगे तो समाज अपने आप ठीक होता चला जाएगा। उन्होंने कहा कि जल–वायु और वृक्ष वनस्पति ये पर्यावरण के घटक तत्व हैं और ये प्रत्येक लोक में ज़ीवनी शक्ति के लिए अनिवार्य हैं, यदि ये नहीं होंगे तो मानव का जीवित रहना सम्भव नहीं है। इन तत्वों के प्रदूषण या विनाशन से पर्यावरण प्रदूषण होता है। आज विश्वभर में भूमि, जलवायु आदि सबको अत्यधिक मात्रा में प्रदूषित किया जा रहा है। यांत्रिक उपकरण इस समस्या को और बढ़ा रहे हैं। जीवनी शक्ति प्राणतत्व या आक्सीजन के एकमात्र स्रोत वृक्ष वनस्पतियों को निर्दयतापूर्वक काटा जा रहा है। यदि वृक्ष नहीं होंगे तो मनुष्य को ऑक्सीजन नहीं मिल पाएगा और वह जीवित नहीं रह सकेगा। वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए जलवायु और वृक्ष वनस्पतियों को प्रमुख साधन बताया है। डी.ए.एन.कालेज आफ एजुकेशन के उपप्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी ने कहा कि जस्टिस प्रीतम पाल जी पक्के आर्य समाजी हैं और आज के संदर्भ में ऐसे लोगों की नितान्त आवश्यकता है। उन्होंने पर्यावरण के विषय पर बोलते हुये कहा कि वायु हमारे हृदय के स्वास्थ्य के लिए कल्याणकारक आरोग्य कर ओषधि को प्राप्त कराता है और हमारी आयु को बढ़ाता है। यह वायु हमारा पितृवत् पालक, बन्धुवत् धारक, पोषक और मित्रवत् सुखकर्ता है और हमें जीवन वाला करता है। इस वायु के घर अन्तरिक्ष में जो अमरता का निक्षेप भगवान द्वारा स्थापित है, उससे यह वायु हमारे जीवन के लिए जीवनतत्त्व प्रदान करता है। पंजाब सरकार के भूतपूर्व चीफ सैक्रेटरी श्री सुबोध चन्द्र अग्रवाल जी ने नवांशहर के नगर कौंसिल के प्रधान श्री ललित मोहन पाठक की तारीफ करते हुये कहा कि पंजाब के समस्त नगर कौंसिल प्रधान को इनका अनुसरण करना चाहिये।

इस अवसर पर पंजाब सरकार के भूतपूर्व चीफ सैक्रेटरी श्री सुबोध चन्द्र अग्रवाल, पद्मश्री (शेष पृष्ठ सात पर)

आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर में साप्ताहिक सत्संग

आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर में हवन यज्ञ करते हुये आर्य समाज के सदस्य एवं चित्र दो में गरीब परिवारों को राशन वितरित करते हुये आर्य समाज के पदाधिकारी एवं अन्य।

आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर में स्वर्गीय माता जगदीश रानी धवन पत्नी स्वर्गीय ओम प्रकाश धवन जी की पुण्य तिथि हवन यज्ञ करके मनाई गई। डा. विनोद मेहता जी ने वैदिक मंत्रोंच्चारण करके बड़ी ही श्रद्धा के साथ हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया। श्री सतीश धवन तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अलोका धवन जी ने यजमान पद को सुशोभित किया। उनका साथ श्रीमती शशि बाला, निर्मल, अभिषेक धवन तथा अन्य आए सभी गणमान्य सदस्यों ने दिया। यज्ञ के पश्चात अपने प्रवचन में श्री विनोद मेहता जी ने कहा कि संसार के सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में मनुष्य को उपदेश देते हुए कहा गया है कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात् हे मनुष्यों! सारे संसार को आर्य बनाओ। जब वेद की यह घोषणा हमारे सम्मुख प्रस्तुत होती है तो मन में विचार आता है कि आर्य कौन है? आर्य किसे कहते हैं? और आर्य कहलाने का अधिकारी कौन है? जिसे कि हमने अपने और दूसरों को बनाना है। शास्त्रों में अनेक प्रकार से आर्य शब्द की व्युत्पत्ति दी गई है। व्याकरण–कर्त्ता पाणिनि मुनि ने आर्य की सिद्धि में अर्य: स्वामीवैश्ययो: सूत्र से प्रदर्शित किया है कि अर्य का अर्थ है स्वामी। अर्थात् जो इन्द्रियों का स्वामी है, जितेन्द्रिय है, वह अर्य कहलाता है। सदाचार आदि श्रेष्ठ गुणों को धारण करने वाला व्यक्ति आर्य कहलाने का अधिकारी है। उन्होंने कहा कि आर्य श्रेष्ठ पुरूष का

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।